मोरंगे

फरवरी 2012

इस बार

खिड़की

3 पप्पू की पतंग

कविताएँ

7 मेरा जंगल / लाडा–लाडी

8 भैंस / घड़ी

कहानियाँ

9 छोटी बहू

10 बिल्ली का नाटक
खेलता आदमी

11 मेरे दोस्त

याद की धूप–छाँव में

12 बेटा चलेगा तैरने

बात लै चीत लै

14 रानी चम्पाकली

17 मटरगश्ती बड़ी सस्ती

18 कुछ हमने बढ़ायी
कुछ तुम बढ़ाओ

19 तेरी–मेरी, मेरी–तेरी बात

विनोद प्रजापत
समूह–सूरज
उम्र–11 वर्ष

सहयोग : **विष्णु, भारती, गौरव, हरीश**

डिज़ाइन : **अश्विनी कुमार पंकज**

प्रूफ़ : **नरेश कुमार गौत्तम**

वितरण : **लोकेश राठौर**

आवरण पर चित्र :
सोनू, महक, 7 वर्ष

फरवरी 2012, वर्ष 3, अंक 32

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन', आस्ट्रेलिया के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
मनीष पांडेय
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
3/39, हाउसिंग बोर्ड,
सवाई माधोपुर, राजस्थान

खिड़की

पप्पू की पतंग

पप्पू अपने घर के पास के टीले से पतंग उड़ा रहा था।
अचानक हवा का एक तेज झोंका आया।
पप्पू को पतंग की डोर दोनों हाथों से कसकर पकड़नी पड़ी।
हवा के झोंके ने पतंग को खींचा।
पतंग ने पप्पू को आसमान में खींचा।
पप्पू ने डर से आंखों को मींचा।
पप्पू की सू–सू ने धरती को सींचा।
पप्पू जोर से चिल्लाया, ''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,
हवा ने खींची पप्पू की पतंग, पप्पू भी लिपटा उसके संग।''

दो आदमी सुबह–सुबह अपने कुत्तों को घुमाने ले जा रहे थे। उन्होंने पप्पू की मदद करनी चाही। उन्होंने कहा, ''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।
हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''
फिर उन दोनों आदमियों ने, और उन दोनों कुत्तों ने पतंग की डोर को पकड़ा,
यूं कहिए डोर को जकड़ा।
पर हवा ने और जोर पकड़ा,
उन्हें भी अपने कब्जे में जकड़ा।
अब पतंग टीले से उड़ते हुए पार्क में पहुँची।
दोनों आदमी जोर से चिल्लाए ''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,
हवा ने खींची पप्पू की पतंग,
हमें भी लपेटा उसने अपने संग।''

तीन औरतें बग्घियों में बच्चों को घुमाने ले जा रही थी। वे भी पतंग की डोर के पीछे–पीछे दौड़ी और चिल्लायी। ''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।
हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''
फिर उन तीनों औरतों ने पतंग की डोर को पकड़ा,
यूं कहिए डोर को जकड़ा,
पर हवा ने और जोर पकड़ा,
उन्हें भी अपने कब्जे में जकड़ा।
अब पतंग उड़ते–उड़ते जंगल के पास पहुंच गई थी। अब उन दोनों आदमियों

और तीनों औरतों ने मिलकर जोर से चिल्लाया, ''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,
हवा ने खींची पप्पू की पतंग,
हमें भी लपेटा उसने अपने संग।''
चार घुड़सवारों ने भी पतंग का पीछा किया। उन्होंने कहा,
''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।
हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''
फिर उन चारों घुड़सवारों ने पतंग की डोर को पकड़ा,
यूं कहिए डोर को जकड़ा।
पर हवा ने और जोर पकड़ा,
उन्हें भी अपने कब्जे में जकड़ा।
अब पतंग उड़ते–उड़ते नदी के किनारे पहुंच गई थी। अब उन दोनों आदमियों, तीनों औरतों
और चारों घुड़सवारों ने मिलकर जोर से चिल्लाया, ''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,
हवा ने खींची पप्पू की पतंग,
हमें भी लपेटा उसने अपने संग।''
नदी के किनारे पाँच मछुआरों ने भी डोर का पीछा किया। उन्होंने कहा,
''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।
हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''
फिर उन पाँचों मछुआरों ने पतंग की डोर को पकड़ा,
यूं कहिए डोर को जकड़ा।
पर हवा ने और जोर पकड़ा,
उन्हें भी अपने कब्जे में जकड़ा।

नंदिनी, समूह–रंगोली, उम्र–5 वर्ष

अब पतंग उड़ते–उड़ते नदी के पुल के पास पहुँच गई थी। अब उन दोनों आदमियों, तीनों औरतों, चारों घुड़सवारों और पाँचों मछुआरों ने मिलकर जोर से चिल्लाया,
''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,
हवा ने खींची पप्पू की पतंग,
हमें भी लपेटा उसने अपने संग।''
छह किसान खेत में काम छोड़कर मदद करने के लिए पतंग की डोर की ओर

लपके। उन्होंने कहा,

''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।

हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''

फिर उन छहों किसानों ने

पतंग की डोर को पकड़ा,

यूं कहिए डोर को जकड़ा।

पर हवा ने और जोर पकड़ा,

उन्हें भी अपने कब्जे में जकड़ा।

अब पतंग पुल से होती हुई बड़े होटल के पास पहुँची। अब उन दोनों आदमियों, तीनों औरतों, चारों घुड़सवारों, पांचों मछुआरों और छहों किसानों ने मिलकर जोर से चिल्लाया,

''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,

हवा ने खींची पप्पू की पतंग, हमें भी लपेटा उसने अपने संग।''

सात वेटर मदद करने के लिए होटल से दौड़े–दौड़े आए। उन्होंने कहा,

''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।

हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''

फिर उन सातों वेटरों ने

पतंग की डोर को पकड़ा, यूं कहिए डोर को जकड़ा।

पर हवा ने और जोर पकड़ा, उन्हें भी अपने कब्जे में जकड़ा।

अब पतंग होटल से होती हुई बंदरगाह के पास पहुँची।

अब उन दोनों आदमियों, तीनों औरतों, चारों घुड़सवारों, पाँचों मछुआरों, छहों किसानों और सातों वेटरों ने मिलकर जोर से चिल्लाया, ''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,

हवा ने खींची पप्पू की पतंग,

हमें भी लपेटा उसने अपने संग।''

आठ नाविक बंदरगाह से उनकी मदद के लिए दौड़े। उन्होंने कहा,

''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।

हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''

फिर उन आठों नाविकों ने पतंग की डोर को पकड़ा,

यूं कहिए डोर को जकड़ा।

पर हवा ने और जोर पकड़ा,

उन्हें भी अपने कब्जे में जकड़ा।

अब पतंग बंदरगाह से होती हुई शहर के पास पहुँची। अब उन दोनों आदमियों, तीनों औरतों, चारों घुड़सवारों, पाँचों मछुआरों, छहों किसानों, सातों वेटरों और आठों नाविकों ने मिलकर जोर से चिल्लाया, ''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,

हवा ने खींची पप्पू की पतंग,

हमें भी लपेटा उसने अपने संग।''

नौ ग्राहक उनकी मदद के लिए दौड़े। उन्होंने कहा,

''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।

हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''

फिर उन नौ ग्राहकों ने पतंग की डोर को पकड़ा,

यूं कहिए डोर को जकड़ा।

पर हवा ने और जोर पकड़ा,

उन्हें भी अपने कब्जे में जकड़ा।

अब पतंग शहर से होती हुई फॉयर–स्टेशन के पास पहुँची। अब उन दोनों आदमियों, तीनों औरतों, चारों घुड़सवारों, पांचों मछुआरों, छहों किसानों, सातों वेटरों, आठों नाविकों और नौ

ग्राहकों ने मिलकर जोर से चिल्लाया, ''बचाओ–बचाओ, जल्दी आओ,

हवा ने खींची पप्पू की पतंग, हमें भी लपेटा उसने अपने संग।''

दस फॉयरमैनों ने झट से अपनी सीढ़ी उठाई और मदद करने को दौड़े। उन्होंने कहा,

''हवा चले सर्र–सर्र, पतंग उड़े फर्र–फर्र।

हम डोर खींचेंगे जब, पतंग आएगी नीचे तब।''

फिर उन दसों फॉयरमैनों ने

पतंग की डोर को पकड़ा, यूं कहिए डोर को जकड़ा।

फिर उन्होंने पतंग की डोर को पूरा दम लगाकर खींचा।

तभी अचानक हवा चलना बंद हो गई।

कुछ देर बाद सब लोग उठकर खड़े हुए। फिर सब लोग मिलकर पप्पू के बगीचे में पार्टी के लिए गए। तब हवा एकदम शांत थी।

पर इस घटना को लोग कभी नहीं भूले।

वह दिन जब हवा के झोंके ने पतंग को खींचा

पतंग ने पप्पू को आसमान में खींचा

एलिजाबेथ मैकडोनॉल्ड

(भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा जनवाचन के तहत प्रकाशित पुस्तक से साभार)

कविता

मेरा जंगल

जंगल–जंगल जाता हूँ
जंगल–जंगल आता हूँ।
जंगल मेरा स्कूल है
स्कूल में मैं पढ़ता हूँ।
रोज स्कूल जाता हूँ
फल फूल खाता हूँ।
जंगल में मैं सोता हूँ
कभी–कभी मैं रोता हूँ।
जंगल के पास जो घर हैं
उनमें लकड़ी वाला मेरा घर है।
जंगल–जंगल जाता हूँ
जंगल–जंगल आता हूँ।

भीमसिंह, समूह–सूरज

बीना, समूह–सागर

लाडा–लाडी

लाडो बैठो पाडा पे
लाडी बैठी पाडी पे
लाडो गर्‌यो धड़ाम से
लाडी गरी टप से
लाडो उड़्यो हवा में
लाडी उड़ी आँधी में
लाडो बैठ्यो घर में
लाडी बैठी छप्पर में
लाडी रोवै लूगड़ी में

जीतू, समूह–बादल, उम्र–9 वर्ष

लाडो हँसे पागड़ी में
लाडा लाडी लाडा लाडी
साग सब्ज़ी खाती लाडी
पुआ पापड़ी खावै लाडा
हरा भरा घास खाते पाडा।

हेमा सैनी,
समूह–झील,
उम्र–8 वर्ष

भैंस

लम्बे काले सींग हैं उसके
बकरी बराबर बछड़ा जिसके
खाना खाती हरा–भरा
लोग कहते हैं उसको चारा
भैंसा रहता उसका दूल्हा
दूध देती है चर मर – चर मर
ले आते है। बाल्टी भरकर
दे देती है जिसके टक्कर
बदल देती है उसका फेस
नाम रख दिया उसका भैंस।

बृजेश गुर्जर,
समूह–फूल,
उम्र– 10 वर्ष

कविता,
समूह–वाटिका,
उम्र–6 वर्ष

घड़ी

एक बकरी ने पहनी घड़ी
पहन के वो नाची तगड़ी
आशा, रीना आई देखने
ढोल बजा कर
नाचे छमा छम बकरी
आशा के थी सिर पर तसली
नाच देखकर फेंकी तसली
तसली में बैठी थी मिसरी
मिसरी कू तो खा गई बकरी।

निरमा बाई गुर्जर,
समूह–गुलशन

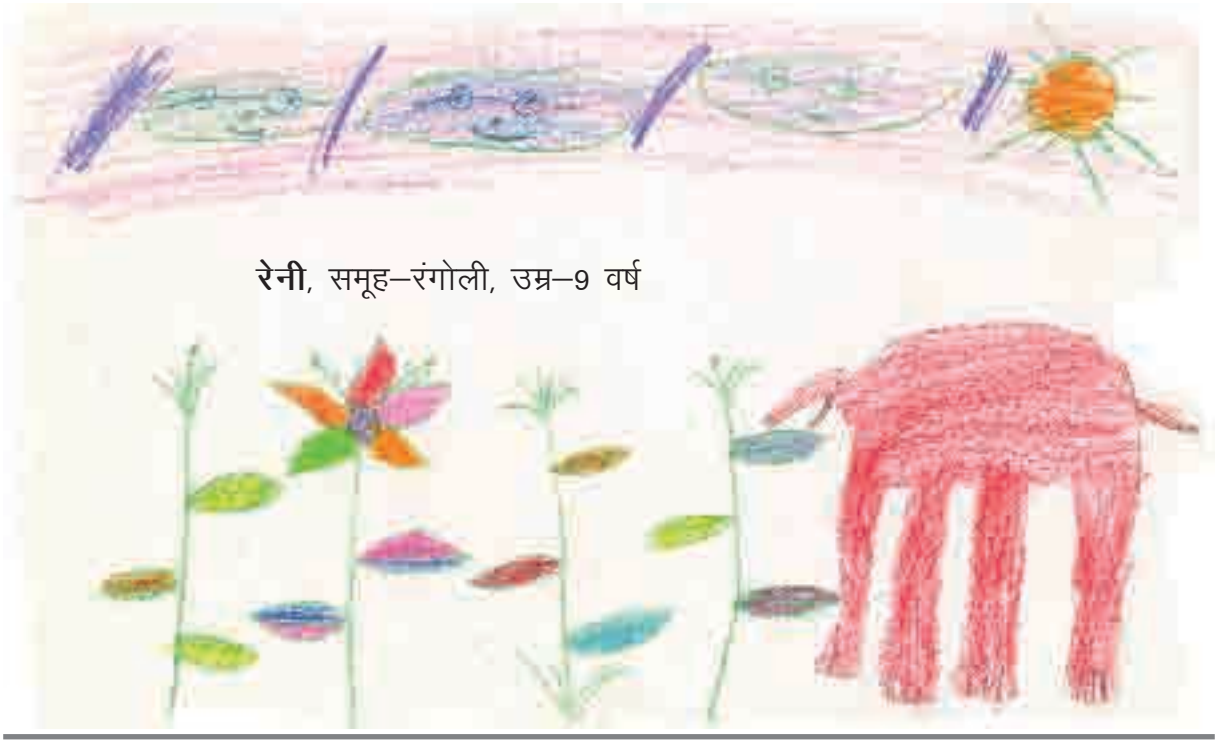

रेनी, समूह–रंगोली, उम्र–9 वर्ष

छोटी बहू

एक सेठ था। सेठ के सात लड़के थे। सातों के पत्नियाँ थी। सेठ के लड़के बहुत सारा काम करते थे और सेठ के छोटे बेटे की पत्नी बहुत सीधी थी व सेठ के छःओं बेटों की पत्नियाँ चालाक थी। सेठ के छोटे लड़के की पत्नी से दूसरे बेटों की पत्नियाँ घर का सारा काम करवाती थी। छोटी बहू उन सब बड़ी बहुओं से परेशान थी, पर बैचारी क्या करती। छोटी बहू को एक दिन रोना आ गया और उसको उसके मम्मी–पापा की याद आई। वह और रोने लगी फिर चुप हो गई। छोटी बहू ने सोचा की इससे तो मरना ही अच्छा है। छोटी बहू एक दिन घर से निकल गई। उसे चलते–चलते रात हो गई। उसे एक घर दिखाई दिया उस घर में बंदरिया रहती थी। छोटी बहू बंदिया के घर में छिप गई। बंदरिया बंदर से बोली ''यहाँ मानव की खुशबू आ रही है।'' बन्दरिया बोली, ''कौन है? बाहर निकल आओ।'' छोटी बहू निकली। बंदरिया बोली, ''तू यहाँ क्यों आई?'' बहू बोली मेरे कोई माँ–बाप नहीं है मैं कहाँ जाऊँ?'' बंदरिया बोली, ''मेरे पास ही रह ले और खूब खा और अच्छी तरह से रह।

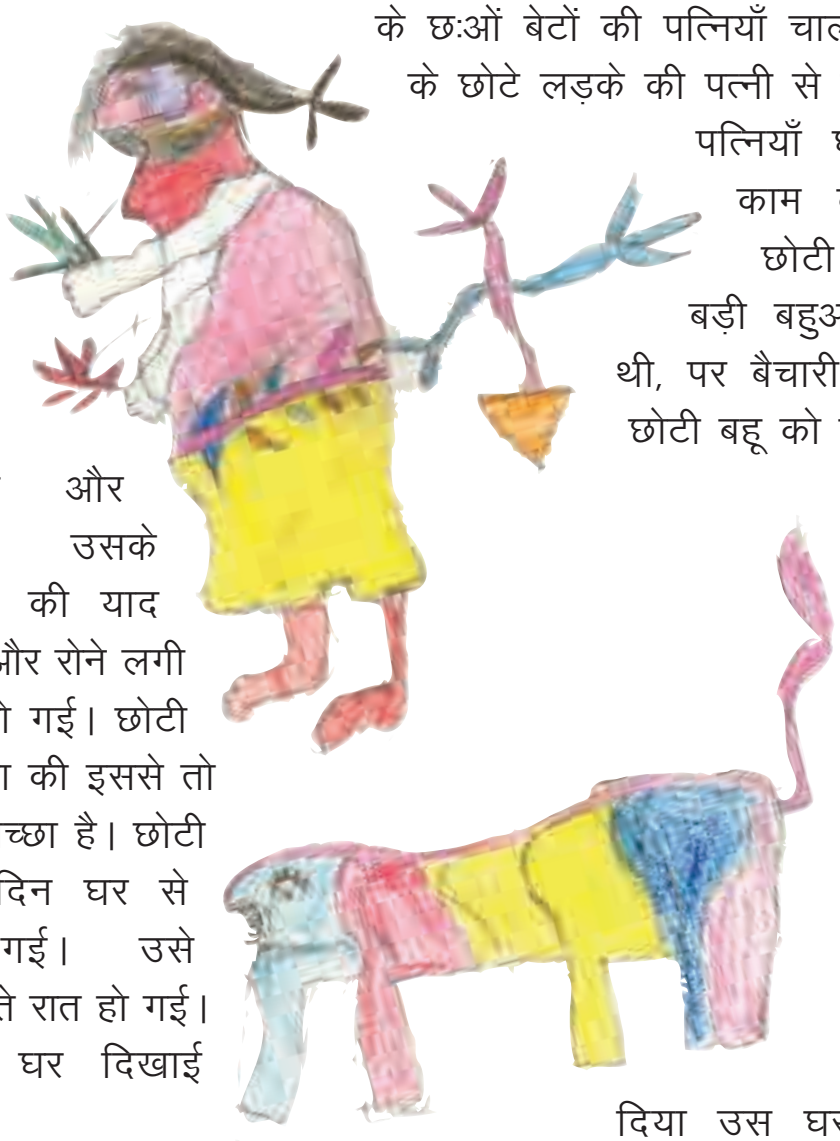

अंगूरी,
समूह–महक,
उम्र–9 वर्ष

नीतू शर्मा, उम्र–9 वर्ष, समूह–फूल

बिल्ली का नाटक

एक खरगोश था। वो रेस लगाना चाहता था। अचानक से उसके सामने एक बिल्ली आई। खरगोश ने बिल्ली से कहा, ''क्या तुम मेरे साथ रेस लगाओगी?'' बिल्ली बोली, ''हाँ।'' फिर बिल्ली और खरगोश रेस लगाने लगे। कभी बिल्ली आगे कभी खरगोश आगे। खरगोश रेस जीत गया तो बिल्ली को बहुत बुरा लगा। बिल्ली ने खरगोश से बदला लेने की सोची। बिल्ली ने सोचा, ''चलो मैं पानी में डूबने का नाटक करती हूँ।'' बिल्ली ने कहा, ''बचाओ–बचाओ।'' जैसे ही खरगोश का ध्यान बिल्ली पर आया। खरगोश जल्दी–जल्दी भागा। खरगोश ने पानी में डुबकी लगाई। बिल्ली बाहर निकल गई और खरगोश डूब गया। फिर बिल्ली को दुःख हुआ। बिल्ली ने पानी में डुबकी लगाई और बिल्ली को खरगोश मिल गया। बिल्ली ने खरगोश की जान बचा ली। बिल्ली और खरगोश साथ–साथ रहने लगे और खूब खेलते।

अनुज, समूह–रंगोली, उम्र–8 वर्ष

कविता, समूह–महक, उम्र–5 वर्ष

खेलता आदमी

एक गाँव था। उस गाँव में एक आदमी रहता था। वह बहुत ही गरीब था। उसके पास एक कुत्ता और एक बकरी थी। कुत्ता और बकरी बहुत समझदार थे। एक दिन वह आदमी खेलने गया था। कुत्ता आदमी को बुलाने आया और बोला ''तुझे कोई बुला रहा है।'' पर वह आदमी नहीं गया और कुत्ते से कहा ''यहीं बुला ला।'' वह कुत्ता उन आदमियों को बुला लाया तो उन आदमियों ने कहा ''इतने बूढ़े हो गये हो, फिर भी आपको खेलते शर्म नहीं आई।'' उस आदमी ने कहा ''मेरी इच्छा खेलने की हुई, इसलिए मैं खेल रहा हूँ। मेरी इच्छा नहीं होती तो मैं नहीं खेलता।''

मनीषा, समूह–झील

मेरे दोस्त

मीनाक्षी,
समूह–आकाश
उम्र–5 वर्ष

एक सोनू नाम का लड़का था। वह रोज स्कूल में पढ़ने के लिए जाता था। उसका स्कूल जंगल में था। जंगल में बोर (बेर), आम, तेंदू के पेड़ थे। सोनू छुट्टी होने के बाद बोर, तेंदू, आम खाने के लिए रूक जाता था। आम के पेड़ पर बहुत सारे बंदर रहते थो, पास में ही हाथी और खरगोश भी रहते थे। ये सब सोनू के दोस्त थे। ये सब सोनू को जंगल की बातें बताते थे और सोनू भी इन्हें अपने गाँव व घर के बारे में बताता।

एक दिन सोनू स्कूल से आ रहा था वह आम के पेड़ के पास आया, आज वहाँ कोई भी नहीं था। सोनू बहुत देर तक वहीं बैठा रहा पर कोई नहीं आया। तब सोनू ने हाथी, बंदर को आवाज़ लगाई। सोनू की आवाज़ सुनकर हाथी वहाँ आ गया। सोनू ने हाथी से पूछा की ''तुम कहाँ चले गये थे, मैं बहुत देर से यहाँ बैठा हूँ।'' हाथी ने कहा ''आज एक शेर जंगल में आ गया, वह हमें खाने आ रहा था, हम सब भागकर पास में बड़े से पेड़ के पीछे छिप गये।'' हाथी रोते हुए कहने लगा कि ''सोनू, अब वह शेर हम सबको खा जायेगा, तुम भी स्कूल मत आया करों नहीं तो वह तुम्हें भी खा जायेगा।'' रात होने वाली थी, सोनू अपने घर आ गया। उसने अपने पापा को सारी बात बताई, उसके पापा जंगल की चौकी में काम करते थे। उन्होंने सारे चौकी वालों को बात बताई। चौकी वालों ने दूसरे दिन जंगल में एक पेड़ के नीचे एक बकरी बाँध दी और खुद जाल लेकर पेड़ पर चढ़कर बैठ गये। रात में शेर बकरी के पास उसको खाने के लिए आया तो पेड़ पर बैठे सोनू के पापा ने जाल शेर पर पटक दिया। चौकी वाले शेर को जीप में डालकर ले गये। हाथी, बंदर व दूसरे जानवर वापस आम के पेड़ के पास आ गये।

बंटी, मनीषा–1, मनीषा–2, समूह–आकाश

याद की धूप–छाँव में

बेटा चलेगा तैरने

मेरे गाँव खण्डार में एक किला है, जिसका नाम तारागढ़ है। गाँव के लोग अपने अधिकतर कार्यक्रमों का आयोजन किले पर ही करते थे। किले के अन्दर कई बडे–बड़े महल और 7 बड़े पानी के कुण्ड हैं जो कि सीढ़ीदार हैं, जिनमें 12 महिने पानी की खूब उपलब्धता रहती है। मेरे दादा जी ने बताया था, कि हर एक कुण्ड

मधुसूदन, समूह–रंगोली, उम्र–9 वर्ष

एक खाट की बाण बराबर गहरा है और लक्ष्मण कुण्ड तो सात खाट की बाण बराबर गहरा है। सभी कुण्डों और महलों के अलग–अलग नाम हैं। ताऊ जी के दोस्त से मैं हमेशा तैरना सिखाने के लिए कहता रहता था। वह अक्सर हमारे घर आते–जाते रहते थे। मेरे ताऊजी ने एक पार्टी किले में देने का विचार बनाया और हमसे कहा। यह सुनकर हम सभी चहचहा उठे। सारे भाई बहन हम, ताऊजी के बच्चे और भुआ के बेटे–बेटी। हम अपनी टोली बना, किले पर जाने की तैयारी करने लगे। मैंने भी अपने नये जूते निकाले, जिन्हें मैंने किसी अच्छे काम से पहनने की शुरूआत करने के लिए रख रखे थे।

मैंने सोचा नये जूतों का शुभारम्भ इसी समय पर करना चाहिए। आखिर वह दिन आया। लड्डू–बाटी बनने का सामान मजदूर लोग उठाकर चलने लगे। हम, सब लोगों से पहले तैयार होकर घर से बाहर आकर, अन्य सदस्यों का इंतज़ार करने लगे। किले पर जाने की बहुत जल्दी हो रही थी। अन्य लोगों को गुस्सा आ रहा था कि मम्मी, ताईजी जल्दी से तैयार होकर क्यों नहीं आ जाती। क्या हम इन मजदूरों के साथ ही चले जायें। घर से थोड़ी दूर आगे तक जाते और पीछे देखते

लेकिन घर के बाहर मम्मी, ताईजी, भुआ जी कोई भी नहीं दिखता तो हम वापस आ जाते। आखिर मम्मी, बुआजी, ताईजी सभी तैयार होकर आए और हम सब बच्चे दौड़ते हुए उनके आगे–आगे चलने लगे। उठते–बैठते हम किले पर पहुँच ही गये। किले से नीचे खण्डार का दृश्य दिखाई दिया। चारों तरफ हरियाली, नदी व तालाब पानी से छकाछक भरे थे। खेत लग रहे थे मानों हरे रंग के दूर–दूर तक गद्दे बिछे हुए हों। इन पर कूदें तो कितना उछलेंगे। आँखों में इतना बड़ा दृश्य कैद ही नहीं हो पा रहा था। आँखें मूंद–मूंद कर उस छवि को बाँधना चाह रहा था लेकिन कहाँ–कहाँ देखूं, क्या–क्या देखूँ? समझ में नहीं आ रहा था। यह नज़ारा देख हमने किले में प्रवेश किया और देखा इतना बड़ा दरवाजा, उसकी मोटी–मोटी सांकल। इनको देखकर लग रहा था, कि कैसे ये दरवाजा बना होगा? इसको किस तरह से, कितने लोगों ने मिलकर उठाया और लगाया होगा?

धीरे–धीरे हम पार्टी वाली जगह पर पहुँचे। एक तरफ लड्डू बाटी बन रहे थे दूसरी तरफ बड़ा सा पानी का कुण्ड था जिसमें पापा, ताऊजी, फूफाजी व पापा के दोस्त तैरकर नहा रहे थे। तभी मेरे ताऊ जी के दोस्त से मैने कहा मुझे तैरना सिखाओगे ना तो उन्होंने मुझे उठाकर कुण्ड में फेंक दिया। मैं पानी के अन्दर गिरा तो मुझे पीला–पीला नजर आया लेकिन कुछ स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था। खुद को हल्का व उड़ता हुआ लग रहा था। मैंने सोचा आज तो अपन मर गये। तभी पानी के ऊपर आया तो पाया मेरे चारों तरफ पापा, ताऊजी व उनके दोस्त तैर रहे थे। मैं जोर–जोर से चिल्लाया, रोया ''मुझे बचाओ, मैं मर जाऊंगा।'' पानी मेरे सीने को जैसे चीर रहा था। हाथ–पाँव, आवाज़ सब काँप रही थी। कुछ कहते, करते नहीं बन पा रहा था। तभी ताऊजी के दोस्त ने कहा ''तैर।'' मैंने कहा ''मैं डूब जाऊंगा।'' वह बोले ''पहले हम डूबेंगे, हम मरेंगे तुझे कुछ नहीं होने देंगे।'' लेकिन मैं घबरा रहा था और पाँव मारना भी छोड़ दिया। तब मेरे ताऊजी के दोस्त ने मेरा हाथ पकड़कर खींचा और मुझे सीढ़ियों पर लाकर खड़ा कर दिया। मैं फिर भी जोर–जोर से रो रहा था। हाथ–पाँव काँप रहे थे और वे ताऊजी के दोस्त मुझे दुश्मन लग रहे थे। फिर पापा ने आकर बताया उन्होंने तो तुम्हें तैरना सिखाना चाहा है ताकि तुम तैर सको। कभी पानी में फँसों तो तुम तैरकर बच जाओ और आखिर में उन्होंने ही तुम्हें पानी से निकाला है। फिर मैंने ताऊजी के दोस्त की तरफ देखा तो वहाँ उपस्थित सभी लोग मुझ पर हँस रहे थे। मेरा चेहरा डर के मारे अज़ीब हो रहा था। लग रहा था कि सब मुझे चिढ़ा रहे हैं। आज भी जब ताऊजी के वह दोस्त मिलते हैं तो मुझे देखकर कहते हैं, ''बेटा चलेगा तैरने।''

हरीश तिवारी, शिक्षक, उदय पाठशाला सवाई माधोपुर

बात लै चीत लै

रानी चम्पाकली

एक राजा के सात बेटे थे। छः का विवाह हो गया था। छोटा राजकुमार अभी कुंआरा था। एक दिन उसने अपनी एक भाभी से पूछा '' जब भैया भोजन करने बैठते है, तब तुम पंखा झलती हो। पर जब मैं भोजन करने बैठता हूँ, तो मुझे पंखा क्यों नहीं झलती?''

भाभी बोली – ''क्या मैं तुम्हारी विवाहिता हूँ। पंखा झलवाने का इतना ही शौक है तो जाकर चम्पाकली रानी को ब्याह कर ले आओ।''

भाभी की यह बात उसे लग गई। वह घर से निकल पड़ा। चलते–चलते एक जंगल में पहुँचा। वहाँ एक महात्मा जी तपस्या कर रहे थे। वह थका हुआ था, वहीं बैठ गया।

बाबा का ध्यान भंग हुआ, तो उन्होंने पूछा – ''बच्चा तुम कहाँ जा रहे हो?''

उसने उत्तर दिया – ''बाबा, मैं चम्पाकली रानी को ढूंढने जा रहा हँ।''

बाबा ने कहा –''बेटा, लौट जाओ। यह बड़ा कठिन काम है।''

वह बोला –''बाबा अब तो जान भले ही चली जाए, लेकिन चम्पाकली को लिए बिना नहीं लौटूँगा।''

बाबा ने कहा –''अच्छा जाओ। सात समुद्र पार एक पेड़ है। वहाँ से एक फल तोड़ना और उसे लेकर भाग आना। लेकिन यह ध्यान रहे कि लौटते समय पीछे पलट कर मत देखना, नहीं तो तुम्हें दैत्य खा जायेंगे। उसने कहा –''अच्छा बाबा।''

सात समुद्र पार करके वह उस पेड़ के पास पहुँच गया और फल तोड़कर लौटने लगा। लौटते समय दैत्यों ने उसका पीछा किया। उसे बाबा की चेतावनी का ध्यान ही नहीं रहा और उसने पीछे मुड़कर देख लिया। इतने में दैत्यों ने उसे तोड़–मरोड़ डाला और उसके हाथ से फल छीन लिया।

महात्मा जी उसकी प्रतीक्षा करते रहे। जब वह लौटकर नहीं आया, तो वह समझ गये कि उसने पीछे मुड़कर देख लिया है और वह दैत्यों द्वारा मार डाला गया है। महात्माजी उस जगह पर पहुँचे और उसकी हड्डियाँ बटोर कर उन्होंने उसको पुनः जीवित कर दिया। महात्माजी ने उसे समझाया ''अब चलो लौट चलो।'' वह बोला –''नहीं बाबा चम्पाकली को लिए बिना नहीं लौटूँगा।''

वह पुनः उस पेड़ के पास गया और फल तोड़कर भागा। इस बार उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा और फल लेकर वापस आ गया। महात्माजी ने उससे कहा ''इस

फल को रास्ते में मत फोड़ना नहीं तो धोखा हो जायेगा। इसको घर जाकर फोड़ोगे, तो इसमें से तुम्हारी चम्पाकली रानी निकलेगी।''

वह फल लेकर चल पड़ा। उसके मन में संदेह हुआ कि कहीं फल में से रानी निकलती है? इतना सोचते ही उसका जी नहीं माना और उसने फल तोड़ दिया। उसमें से एक परम सुंदर रानी निकल पड़ी। वह प्रसन्न हो गया और रानी को लेकर चल पड़ा। रास्ते में वे एक पेड़ के नीचे विश्राम करने के रूके। रानी पंखा झलने लगी, तो उसे नींद आ गई।

सेजल, समूह–रंगोली, उम्र–9 वर्ष

इतने में एक कानी स्त्री सुअर चराते हुए वहाँ आ गई। उसने रानी से कहा –''देखो, तुम्हारे पति के होंठ सूख गए हैं। इन्हें प्यास लगी है।'' रानी ने उससे पूछा ''यहाँ पानी कहाँ मिलेगा?''

वह बोली ''आओ, मेरे साथ चलो।'' उसे लेकर कानी कुए पर गई और बोली ''आओ, इस कुए में झांककर देखें, हम दोनों में से कौन अधिक सुन्दर है। जब दोनों झांकने लगी, तो रानी ज्यादा सुंदर दिखी। कानी बोली –''तुम इतने गहने और कपड़े पहने हो, इसीलिए ज्यादा सुंदर दिख रही हो। चलो, ऐसा करते है। कि मेरे गहने कपड़े तुम पहन लो और तुम्हारे मैं पहन लूँ।'' सरल स्वभाव वाली रानी उसकी बातों में आई। उसने अपने सारे गहने–कपड़ उसे दे दिए और उसके गंदे गहने–कपड़े स्वयं पहन लिए। दोनों जब कुए में झांकने लगी, तो कानी ने रानी को कुए मैं धकेल दिया और स्वयं पेड़ के नीचे आकर राजकुमार का पंखा झलने लगी।

राजकुमार की जब आंख खुली, तो उसने देखा कि रानी तो बदल गई। उसे बाबा की बात याद आई कि रास्ते में फल मत फोड़ना, धोखा हो जाएगा। पर अब

क्या हो सकता था। अब तो धोखा हो ही चुका था। उसने कानी स्त्री को महल मे लाकर अलग एक कोठरी में बंद करके रखा।

राजकुमार जब शिकार खेलने जाता, तो वह कहती कि सब दिशाओं में जाना, लेकिन दक्षिण दिशा में मत जाना। एक दिन राजकुमार ने सोचा कि वह रोज उसे दक्षिण दिशा में जाने के लिए मना करती है, इसलिए उस दिन उसने उस तरफ ही जाने का निश्चय किया। वह दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा। चलते–चलते उसे एक कुआ मिला। राजकुमार को प्यास लगी थी। उसने पीने के लिए कुए से पानी खीचा, तो पानी के साथ एक फल निकल आया। वह फल लेकर घर आ गया और उसने कानी से उस फल की सब्जी बनाने के लिए। कानी ने उस फल को पहचान लिया। उसने उसे तोड़कर पिछवाड़ फेंक दिया तथा किसी अन्य फल की सब्जी बना दी। उस फल से पिछवाड़े एक पेड़ उगा। उसमें फल लगे। एक फल एक गधी ने खा लिया। उस धोखेबाज स्त्री ने पेड़ को पहचान लिया। उसने राजकुमार से कहा कि पेड़ राजा के लिए अशुभ है इसको कटवा दो। राजकुमार ने पेड़ कटवा दिया।

जिस गधी ने फल खाया था, उसके एक सुंदर कन्या पैदा हुई। कानी ने उसे पहचान लिया। उसने राजकुमार से गधी और उसकी कन्या को मरवा देने के लिए कहा। राजकुमार ने उन दोनों को भी मरवा दिया। जिस स्थान पर गधी को मारा गया, वहाँ एक मंदिर बन गया और उस कन्या ज्यों–कि–त्यों जी उठी। वह उस मंदिर में पूजा करती और वहीं रहने लगी।

एक दिन जब राजकुमार शिकार खेलने जा रहा था तो रास्ते में उस मंदिर को देखकर उसे आश्चर्य हुआ कि कौन ऐसा निडर आदमी है, जिसने उनकी जमीन पर यह मंदिर बनवाया है। मंदिर में प्रवेश करने पर उस लड़की को वहाँ देखकर उसने पूछा कि यह मंदिर यहाँ कैसे बना?'' लड़की ने उससे यह सब न पूछने का आग्रह किया। किन्तु राजकुमार के बहुत जिद करने पर उसने प्रारम्भ से अन्त तक की पूरी बात उसे बता दी कि किस तरह एक कानी स्त्री ने उसे धोखा दिया।

राजकुमार चम्पाकली को अपने महल में ले आया। उस कानी स्त्री को उसने जमीन में आधा गड़वाकर कुत्तों से नुचवा दिया। अपनी कोठरी खोलकर जब उसने चम्पाकली को बाहर निकाला तो उसकी भाभियाँ उसकी सुंदरता को देखकर दंग रह गई। वे सोचने लगी कि इसीलिए राजमार उस कोठरी को बंद रखता था और बाहर नहीं निकालता था कि कहीं किसी की नजर न लग जाए। राजकुमार चम्पाकली के साथ सुख से रहने लगा।

(लोककथा)

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ

बूझो यार पहेलियाँ

1 वर्षा बरसी सारी रात, भिगा सब वनराय
घड़ा न डूबा नीर में, पंछी प्यासो जाय

2 कभी दिखती कभी औझल
दोनों बहने रहती थी भूजल

राधेश्याम, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र स.मा.

आरती, समूह–सागर

हीहीही-ठीठीठी

एक बार श्यामू दूध लेने गया। एक बस आ रही थी। बोली पी–पी। श्यामू बोला नहीं पिऊँगा। फिर बस बोली पी–पी, फिर श्यामू बोला नहीं पिऊँगा। फिर बस बोली पी–पी तो श्यामू दूध पी गया। फिर वह घर आया तो उसकी माँ ने पूछा दूध कहाँ है तो श्यामू बोला बस बोली पी–पी तो मैं सारा दूध पी गया।

किरोड़ी, संजय, लोकेश,
समूह–गुलशन

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

मैं मेरे घर में छोटी हूँ,
मैं तो थोड़ी मोटी हूँ।

मनीषा, समूह–गुलशन द्वारा शुरू की गई इस कविता को पूरी करके मोरंगे को भेजें।

एक बार एक किसान था। उसके पास दो बैल थे। किसान रोज–रोज बैलों को चराने जाता था। एक दिन बैलों को पानी नहीं मिला, बैल तड़पने लगे।

रिंकू, समूह–झील द्वारा शुरू कि गई इस कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजें।

मनीष जी ने फैंक्यो डण्डो
विष्णु जी खाग्यो अण्डो।

पिछले अंक में लिखी गयी इन पंक्तियों पर बच्चों ने ये कवितायें लिखकर भेजी हैं –

मनीष जी ने फैंक्यों डण्डो
विष्णु जी खाग्यो अण्डो
अण्डा में निकली मलाई
हमने चढ़ाई कड़ाई
कड़ाई में पटक्या पुआ
मनीष जी की आ गई भुआ
खा गई सारा पुआ।
किरोड़ी, टीना, मनीषा,
समूह–गुलशन

मनीष जी ने फैंक्यो डण्डों
विष्णु जी खाग्यो अण्डो
अण्डो खाकर बण गियो पण्डो
पण्डत ने पाणी पियो ठण्डो
हो गयो बातो पूरो ठण्डो
गड़ा में बाँध्यों कण्डो
कुत्तो पाड़यो बण्डो
नाम धर्‌यो ऊको सण्डो
पण्डत चलावै डण्डो
दौड़ लगावे सण्डो।
निरमा बाई

मनीष जी ने फैंक्ये डण्डो
विष्णु जी खाग्यो अण्डो
या सब देखकर
राधेश्याम जी होग्यो ठण्डो
लोकेश जी बन गयो पण्डो
विष्णु जी के बाँध दियो गण्डो
फिर भी विष्णु जी खाग्यो अण्डो
क्योंकि नरेश जी ने दिखा दियो झण्डो।
मधुसुदन, समूह–रंगोली, उम्र–9 वर्ष

तेरी–मेरी, मेरी–तेरी बात

प्यारे बच्चों,

मोरंगे को इस बार 12 पत्र प्राप्त हुए। सभी पत्र जगनपुरा स्कूल के सागर समूह से थे। प्रियंका, रीना, श्री मोहन, मनराज, नरेशी, आरती, अनुप, विक्रम, बीना, रामहरि, धर्मराज, रीना, रसाल ने अपनी रचनाओं के ना छपने के कारण मोरंगे को पसन्द नहीं किया। उनकी यह शिकायत सही नहीं लगती। मैं आपसे एक सवाल पूछना चाहुँगा। क्या आपके अलावा जिन बच्चों की रचनाएँ छपती हैं वे अच्छी नहीं होती?

सपना राजावत, शिक्षक

यह बात सही है कि हमें अपनी रचनाओं से भावनात्मक लगाव अधिक होने के कारण हम उनकी कमजोरियों को नहीं देख पाते हैं। इसके लिए आप अपनी रचना अपने शिक्षक व स्कूल से रचना लेकर आने वाले व्यक्ति को अवश्य दिखाये। वे जो सुझाव दे उनका ध्यान रखकर अपनी रचना तैयार करें। आपकी रचनाओं में अवश्य सुधार आयेगा।

दूसरी बात मैं आपको बताना चाहूँगा कि आपके विद्यालय से कई बार रचनायें समय पर नहीं आ पाती। शायद आप नियमित नहीं लिख रहे हैं वैसे मैं आपको बता दूँ कि आपकी रचनाएँ मोरंगे में छपती रही हैं। अब हर अंक में आपकी रचना छपे यह जरूरी नहीं। आखिर हमें दूसरे बच्चों के अच्छे काम को भी तो जगह देनी चाहिए ना। मोरंगे को पत्र भेजने के लिए आप सभी को धन्यवाद।

मोरंगे

पहेलियों के ज़वाब – 1 औस 2 मछली

हरीश तिवारी, शिक्षक